**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 187-190**

**I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)**
**e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)**
**Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026**

# भारत–अमेरिका संबंधों में चीन कारक का विश्लेषण

**राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा**
असिस्टेंट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान, के0 बी0 पी0 जी0 कालेज, मिर्जापुर (उ0प्र0) भारत

**Received-22.05.2026, Revised-30.05.2026, Accepted-07.06.2026,** **E-mail:rajendra9695545576@gmail.com**

***सारांशः*** ***भारत और अमेरिका के संबंध इक्कीसवीं सदी में वैश्विक राजनीति के सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में से एक बन गए हैं। इन संबंधों के विकास में आर्थिक सहयोग, रक्षा साझेदारी, तकनीकी सहयोग तथा हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सामरिक हितों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हाल के वर्षों में चीन के बढ़ते आर्थिक, सैन्य एवं भू–राजनीतिक प्रभाव ने भारत–अमेरिका संबंधों को नई दिशा प्रदान की है। चीन की आक्रामक विदेश नीति, दक्षिण चीन सागर में विस्तारवादी गतिविधियाँ, भारत–चीन सीमा विवाद तथा हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती उपस्थिति ने भारत और अमेरिका के रणनीतिक हितों को एक–दूसरे के निकट ला दिया है।***

***यह लेख भारत–अमेरिका संबंधों में चीन कारक का विश्लेषण करता है। इसमें भारत–अमेरिका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चीन की भूमिका, हिंद–प्रशांत रणनीति, क्वाड (QUAD) की उपयोगिता, रक्षा एवं आर्थिक सहयोग तथा भविष्य की संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि चीन का बढ़ता प्रभाव भारत और अमेरिका के बीच सामरिक साझेदारी को सुदृढ़ करने का प्रमुख कारक बन गया है। साथ ही भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए अमेरिका के साथ सहयोग को संतुलित रूप से आगे बढ़ा रहा है।***

***कुंजीभूत शब्द– भारत, अमेरिका, चीन, हिंद–प्रशांत, क्वाड, सामरिक साझेदारी, विदेश नीति, आर्थिक सहयोग, रक्षा साझेदारी, स्वायत्तता।***

**प्रस्तावना–** 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम एशिया–प्रशांत, जिसे अब व्यापक रूप से हिंद–प्रशांत (Indo&Pacific) कहा जाता है, में शक्ति के केंद्र का स्थानांतरित होना है। इस स्थानांतरण के केंद्र में तीन प्रमुख परमाणु–संपन्न राष्ट्र हैंः भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन। ऐतिहासिक रूप से, शीतयुद्ध के दौरान भारत और अमेरिका के संबंध वैचारिक मतभेदों और गुटनिरपेक्षता के कारण ठंडे रहे, जबकि अमेरिका और चीन ने 1970 के दशक में सोवियत संघ के खिलाफ एक रणनीतिक समझ विकसित की थी।

परंतु, 21वीं सदी की शुरुआत के साथ ही वैश्विक भू–राजनीतिक बिसात पूरी तरह से बदल गई है। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिकी एकध्रुवीयता को सबसे बड़ी चुनौती चीन के अभूतपूर्व आर्थिक और सैन्य उभार से मिल रही है। चीन का यह उभार शांतिपूर्ण रहने के बजाय तेजी से आक्रामक और विस्तारवादी होता जा रहा है। दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीपों का निर्माण, पूर्वी चीन सागर में जापान के साथ विवाद, ताइवान पर बढ़ता दबाव और भारत के साथ हिमालयी सीमाओं (विशेष रूप से 2020 का गलवान घाटी संघर्ष) पर चीन के आक्रामक रवैये ने वैश्विक व क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को अस्थिर कर दिया है।

इस बदलते सुरक्षा परिदृश्य में, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के हित तेजी से एक–दूसरे के करीब आए हैं। भारत, जो अपनी सीमाओं पर सीधे चीनी आक्रामकता का सामना कर रहा है, और अमेरिका, जो वैश्विक स्तर पर अपने महाशक्ति के दर्जे को बनाए रखना चाहता है, दोनों के लिए चीन एक साझा रणनीतिक चिंता बन गया है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की 'पिवोट टू एशिया' (Pivot to Asia) नीति से लेकर वर्तमान प्रशासन की हिंद–प्रशांत रणनीति तक, भारत को अमेरिकी विदेश नीति में एक "अपरिहार्य भागीदार" और सुरक्षा प्रदाता (Security Provider) के रूप में देखा गया है। वहीं दूसरी ओर, भारत ने भी अपनी पारंपरिक हिचकिचाहट को छोड़कर अमेरिका के साथ रक्षा व सुरक्षा सहयोग को एक नई ऊंचाई दी है।

अगर अंतरराष्ट्रीय राजनीति के दृष्टिकोण से देखा जाय, तो शक्ति संतुलन (Balance of Power) का सिद्धांत सदैव महत्वपूर्ण रहा है। जब किसी क्षेत्र में एक शक्ति का प्रभाव अत्यधिक बढ़ता है, तब अन्य देश उसके संतुलन के लिए नए गठबंधन एवं साझेदारियाँ विकसित करते हैं। वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में चीन का तीव्र आर्थिक, सैन्य एवं तकनीकी विकास इसी प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रहा है।

भारत और अमेरिका के संबंध शीत युद्ध के दौरान सीमित रहे, क्योंकि भारत गुटनिरपेक्ष नीति का समर्थक था जबकि अमेरिका पाकिस्तान के साथ सामरिक संबंध बनाए हुए था। 1991 के आर्थिक उदारीकरण तथा शीत युद्ध की समाप्ति के बाद दोनों देशों के संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुआ। वर्ष 2005 का भारत–अमेरिका असैनिक परमाणु समझौता इस दिशा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

21वीं सदी के दूसरे दशक में चीन की बढ़ती शक्ति ने भारत और अमेरिका को रणनीतिक रूप से और निकट ला दिया। चीन की बेल्ट एंड रोड पहल (BRI), चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), दक्षिण चीन सागर में सैन्य गतिविधियाँ तथा भारत–चीन सीमा पर तनाव ने दोनों देशों को साझा सुरक्षा दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

भारत की विदेश नीति का प्रमुख आधार "रणनीतिक स्वायत्तता" है। भारत किसी सैन्य गठबंधन का हिस्सा बने बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार विभिन्न देशों के साथ सहयोग करता है। इसी कारण भारत अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध रखते हुए रूस, फ्रांस, जापान तथा अन्य देशों के साथ भी संतुलित संबंध बनाए हुए है।

यह शोध पत्र इस बुनियादी प्रश्न का विश्लेषण करता है कि 'चीन कारक' किस हद तक भारत और अमेरिका को एक–दूसरे के करीब लाया है और क्या यह संबंध केवल एक नकारात्मक प्रतिक्रिया (साझा शत्रु का डर) पर आधारित है या इसके दीर्घकालिक सकारात्मक और संरचनात्मक आधार भी हैं।

**भारत–अमेरिका संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–** भारत–अमेरिका के संबंधों को निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता हैः

**1. शीत युद्ध काल (1947–1991):** स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन का मार्ग अपनाया। दूसरी ओर अमेरिका सोवियत संघ के विरुद्ध वैश्विक गठबंधन बना रहा था। इस कारण दोनों देशों के संबंध अपेक्षाकृत सीमित रहे। 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान अमेरिका ने भारत को सैन्य सहायता प्रदान की, किंतु बाद में अमेरिका का पाकिस्तान के प्रति झुकाव भारत के लिए चिंता का विषय बना रहा।

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

**2. आर्थिक उदारीकरण के बाद (1991–2000):** 1991 में भारत द्वारा आर्थिक सुधारों को अपनाने के बाद अमेरिका के साथ व्यापारिक एवं निवेश संबंधों में तेजी से वृद्धि हुई। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका ने प्रतिबंध लगाए, किंतु कुछ वर्षों के भीतर दोनों देशों ने अपने मतभेदों को दूर कर सहयोग का नया अध्याय प्रारंभ किया।

**3. रणनीतिक साझेदारी का दौर (2000 के बाद):** वर्ष 2005 में भारत–अमेरिका असैनिक परमाणु समझौते ने दोनों देशों के संबंधों को नई ऊँचाई प्रदान की। इसके बाद रक्षा सहयोग, आतंकवाद विरोधी अभियान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान तथा समुद्री सुरक्षा के क्षेत्रों में व्यापक सहयोग विकसित हुआ। आज अमेरिका भारत का प्रमुख रक्षा सहयोगी, व्यापारिक साझेदार तथा तकनीकी सहयोगी है।

**भारत–चीन संबंधों की पृष्ठभूमि–** भारत और चीन एशिया की दो बड़ी उभरती शक्तियाँ हैं। दोनों देशों के संबंध सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा दोनों से प्रभावित रहे हैं। इन दोनों देशों के बीच मुख्य विवादः वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर सीमा विवाद, अरुणाचल प्रदेश पर चीन का दावा, अक्साई चिन का मुद्दा, चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) का पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुजरना, हिंद महासागर में चीन की बढ़ती गतिविधियाँ आदि है। 2020 में गलवान घाटी की घटना के बाद दोनों देशों के संबंधों में गंभीर तनाव उत्पन्न हुआ, जिसने भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित किया।

**अमेरिका–चीन प्रतिस्पर्धा–** वर्तमान समय में अमेरिका और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा कई क्षेत्रों में दिखाई देती हैः व्यापार, तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, रक्षा, हिंद–प्रशांत क्षेत्र, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला आदि। अमेरिका चीन को अपने प्रमुख रणनीतिक प्रतिस्पर्धी के रूप में देखता है, जबकि चीन एशिया और विश्व में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।

**भारत–अमेरिका संबंधों में चीन कारक–** चीन की बढ़ती शक्ति भारत और अमेरिका को कई स्तरों पर निकट लाने का कार्य कर रही है। भारत और अमेरिका दोनों ही मुक्त एवं नियम–आधारित हिंद–प्रशांत क्षेत्र का समर्थन करते हैं। अमेरिका की Indo-Pacific Strategy तथा भारत की SAGAR (Security and Growth for All in the Region) नीति अनेक बिंदुओं पर एक–दूसरे की पूरक हैं। भारत–चीन सीमा पर बढ़ते तनाव के कारण भारत ने अमेरिका सहित समान विचारधारा वाले देशों के साथ रक्षा सहयोग को मजबूत किया और साथ ही दोनों देशों के बीच आधुनिक रक्षा तकनीक, संयुक्त सैन्य अभ्यास एवं रक्षा समझौतों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

चीन के आर्थिक और सैन्य उदय ने एशिया की सामरिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। पिछले दो दशकों में चीन ने अपनी आर्थिक शक्ति, सैन्य आधुनिकीकरण, तकनीकी क्षमता और वैश्विक निवेश कार्यक्रमों के माध्यम से विश्व राजनीति में अपना प्रभाव बढ़ाया है। इसके परिणामस्वरूप भारत और अमेरिका के बीच सामरिक सहयोग अधिक सुदृढ़ हुआ है।

**हिंद–प्रशांत (Indo-Pacific) रणनीति और चीन–** हिंद–प्रशांत क्षेत्र वर्तमान वैश्विक राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र बन चुका है। यह क्षेत्र विश्व व्यापार, समुद्री परिवहन और ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख केंद्र है। अमेरिका का उद्देश्य इस क्षेत्र में स्वतंत्र, खुला और नियम–आधारित समुद्री व्यवस्था बनाए रखना है। भारत भी हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समुद्री सुरक्षा को अपनी विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार मानता है। चीन की दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीपों का निर्माण, सैन्य अड्डों का विस्तार तथा समुद्री दावों ने क्षेत्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताओं को बढ़ाया है। यही कारण है कि भारत और अमेरिका दोनों इस क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहे हैं।

**क्वाड (QUAD) की भूमिका–** क्वाड (Quadrilateral Security Dialogue) भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक समूह है। क्वाड का उद्देश्यः स्वतंत्र एवं खुला हिंद–प्रशांत क्षेत्र, समुद्री सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, साइबर सुरक्षा, महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में सहयोग, आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) को मजबूत बनाना, स्वास्थ्य एवं वैक्सीन सहयोग आदि है। यद्यपि क्वाड किसी सैन्य गठबंधन के रूप में कार्य नहीं करता, फिर भी इसे चीन के बढ़ते प्रभाव के संतुलन हेतु एक महत्वपूर्ण मंच माना जाता है। भारत क्वाड में सक्रिय भूमिका निभाते हुए भी अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखता है।

**रक्षा सहयोग में वृद्धि–** चीन की बढ़ती सैन्य शक्ति ने भारत–अमेरिका रक्षा सहयोग को नई गति प्रदान की है। दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण रक्षा समझौते हुए हैंः

- LEMOA (Logistics Exchange Memorandum of Agreement)
- COMCASA (Communications Compatibility and Security Agreement)
- BECA (Basic Exchange and Cooperation Agreement)

इन समझौतों सेः सैन्य सूचना का आदान–प्रदान, आधुनिक रक्षा तकनीक तक पहुँच, संयुक्त सैन्य अभ्यास, समुद्री निगरानी, उपग्रह आधारित जानकारी का आदान–प्रदान जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं। भारत और अमेरिका नियमित रूप से मालाबार नौसैनिक अभ्यास सहित अनेक संयुक्त सैन्य अभ्यास आयोजित करते हैं।

**आर्थिक सहयोग पर चीन का प्रभाव–** चीन लंबे समय से वैश्विक विनिर्माण (Manufacturing) का प्रमुख केंद्र रहा है। कोविड–19 महामारी तथा अमेरिका–चीन व्यापार विवाद के बाद अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपनी आपूर्ति श्रृंखला को चीन से बाहर स्थानांतरित करने की नीति अपनाई। भारत ने इसे एक अवसर के रूप में देखा। दोनों देशों के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रः सेमीकंडक्टर निर्माण, डिजिटल अर्थव्यवस्था, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), हरित ऊर्जा, रक्षा उत्पादन, महत्वपूर्ण खनिज (Critical Minerals) है। इसके अलावा तकनीकी सहयोग में चीन और अमेरिका के बीच तकनीकी प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण भारत की रणनीतिक भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। भारत और अमेरिका निम्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा रहे हैंः 5G एवं 6G तकनीक, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष अनुसंधान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, जैव प्रौद्योगिकी, सेमीकंडक्टर। भारत का विशाल डिजिटल बाजार अमेरिकी कंपनियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

**चीन–पाकिस्तान गठबंधन और भारत–अमेरिका संबंध–** चीन और पाकिस्तान के घनिष्ठ संबंध भारत की सुरक्षा नीति को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), पाकिस्तान को चीन द्वारा रक्षा उपकरणों की आपूर्ति, संयुक्त सैन्य अभ्यास, संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान को कूटनीतिक समर्थन। इन परिस्थितियों में भारत अमेरिका सहित अन्य लोकतांत्रिक देशों के साथ अपने सामरिक संबंधों को मजबूत कर रहा है। चीन ने हिंद महासागर क्षेत्र में श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार, बांग्लादेश,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

मालदीव आदि देशों में बंदरगाहों और आधारभूत संरचना में निवेश किया है। भारत इसे अपनी समुद्री सुरक्षा की दृष्टि से चुनौती मानता है। अमेरिका भी हिंद महासागर में समुद्री सुरक्षा बनाए रखने के लिए भारत के साथ सहयोग कर रहा है।

**आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) का पुनर्गठन–** कोविड–19 महामारी के बाद विश्व अर्थव्यवस्था ने चीन पर अत्यधिक निर्भरता के जोखिम को महसूस किया। भारत और अमेरिका विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला, विनिर्माण सहयोग, महत्वपूर्ण खनिजों की उपलब्धता, उच्च तकनीकी उद्योग, में सहयोग बढ़ा रहे हैं। वैश्विक मंचों पर भारत और अमेरिका अनेक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सहयोग करते हैं: G-20, संयुक्त राष्ट्र, IPEF, WTO, IMF, विश्व बैंक। हालाँकि दोनों देशों के सभी मुद्दों पर समान दृष्टिकोण नहीं हैं, फिर भी लोकतांत्रिक मूल्यों एवं नियम–आधारित वैश्विक व्यवस्था के समर्थन में उनका सहयोग बढ़ा है। भारत की विदेश नीति किसी सैन्य गुट का हिस्सा बनने के बजाय रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित है। भारत—अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग बढ़ाता है। रूस से रक्षा खरीद जारी रखता है। चीन के साथ व्यापारिक संबंध बनाए रखता है। पश्चिम एशिया तथा यूरोप के साथ भी संतुलित संबंध रखता है। यही संतुलन भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषता है।

स्पष्ट है कि चीन का बढ़ता प्रभाव भारत–अमेरिका संबंधों को सामरिक, आर्थिक और तकनीकी स्तर पर अधिक निकट ला रहा है, फिर भी भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति व रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए सहयोग का संतुलित मॉडल अपनाता है।

**चुनौतियाँ–** यद्यपि भारत और अमेरिका के संबंध पिछले दो दशकों में अत्यंत मजबूत हुए हैं, फिर भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। भारत किसी सैन्य गठबंधन का सदस्य नहीं है। वह अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंध रखते हुए भी रूस, फ्रांस, जापान, आसियान देशों तथा पश्चिम एशियाई देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखता है। इसलिए भारत चीन के विरुद्ध किसी औपचारिक सैन्य गठबंधन का हिस्सा बनने से बचता है। सीमा विवाद और राजनीतिक तनाव के बावजूद भारत और चीन के बीच व्यापार का स्तर अभी भी काफी बड़ा है। भारतीय उद्योग अनेक क्षेत्रों में चीनी कच्चे माल, मशीनरी और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर निर्भर हैं। इसलिए भारत के लिए चीन से पूर्ण आर्थिक दूरी बनाना व्यावहारिक नहीं है। अमेरिका की विदेश नीति समय–समय पर प्रशासन परिवर्तन के साथ बदलती रही है। इससे भारत को अपनी विदेश नीति में लचीलापन बनाए रखना पड़ता है। भारत की रक्षा आवश्यकताओं का एक बड़ा भाग लंबे समय से रूस से जुड़ा रहा है। अमेरिका चाहता है कि भारत पश्चिमी रक्षा प्रणालियों का अधिक उपयोग करे, जबकि भारत दोनों पक्षों के साथ संतुलन बनाए रखना चाहता है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य गतिविधियाँ, ताइवान प्रश्न, दक्षिण चीन सागर का विवाद तथा उत्तर कोरिया जैसे मुद्दे क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करते हैं। इन परिस्थितियों में भारत और अमेरिका को अपनी रणनीति लगातार विकसित करनी पड़ती है।

**भविष्य की संभावनाएँ–** भारत–अमेरिका संबंधों में चीन कारक आने वाले वर्षों में भी महत्वपूर्ण बना रहेगा। भविष्य में सहयोग और अधिक बढ़ने की संभावना है। संयुक्त सैन्य अभ्यासों का विस्तार, रक्षा प्रौद्योगिकी का सह–विकास एवं सह–उत्पादन, समुद्री सुरक्षा और खुफिया सहयोग के साथ–साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्वांटम कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर निर्माण, अंतरिक्ष अनुसंधान आदि इन क्षेत्रों में भारत और अमेरिका की साझेदारी वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। दोनों देश मुक्त एवं विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain), निवेश, विनिर्माण, स्वच्छ ऊर्जा तथा डिजिटल अर्थव्यवस्था में सहयोग को और मजबूत कर सकते हैं। हिंद–प्रशांत में नौवहन की स्वतंत्रता, समुद्री कानूनों का पालन तथा क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने में भारत और अमेरिका की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होगी। संयुक्त राष्ट्र, जी–20, विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक तथा क्वाड जैसे मंचों पर दोनों देशों का सहयोग वैश्विक शासन को भी प्रभावित करेगा।

भारत–अमेरिका संबंधों में चीन की भूमिका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देती है। चीन की बढ़ती आर्थिक, सैन्य एवं तकनीकी शक्ति ने एशिया में शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है। भारत अपनी सीमाओं की सुरक्षा, समुद्री हितों और क्षेत्रीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए अमेरिका के साथ सहयोग बढ़ा रहा है। दूसरी ओर, अमेरिका भारत को हिंद–प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख लोकतांत्रिक एवं रणनीतिक साझेदार के रूप में देखता है। क्वाड, रक्षा समझौते, तकनीकी सहयोग तथा आर्थिक साझेदारी इस संबंध को और मजबूत बना रहे हैं। फिर भी भारत की विदेश नीति का मूल आधार रणनीतिक स्वायत्तता है। भारत किसी भी महाशक्ति के साथ संबंध विकसित करते समय अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। यही कारण है कि वह अमेरिका के साथ सहयोग करते हुए रूस, यूरोप, जापान, आसियान तथा अन्य देशों के साथ भी संतुलित संबंध बनाए रखता है।

अगर सकारात्मक प्रभाव के दृष्टिकोण से देखा जाय, चीन के आक्रामक रुख ने दोनों देशों के बीच दशकों पुराने अविश्वास को समाप्त कर दिया है। अब दोनों देशों के नेतृत्व के बीच एक मजबूत राजनीतिक सहमति है। अमेरिकी तकनीक और खुफिया जानकारी तक पहुंच ने भारतीय सशस्त्र बलों की परिचालन क्षमता को मजबूत किया है, विशेष रूप से लद्दाख सीमा और हिंद महासागर में। वैश्विक मंच पर भारत का उभार: अमेरिका वैश्विक संस्थाओं (जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह – NSG) में भारत की सदस्यता का पुरजोर समर्थन करता है, जिसका चीन हमेशा विरोध करता रहा है।

चुनौतियाँ और मतभेद के दृष्टिकोण से देखा जाय, तो जहाँ चीन एक संयोजक का काम करता है, वहीं भारत और अमेरिका के दृष्टिकोण में कुछ बुनियादी विरोधाभास भी हैं। अमेरिका चाहता है कि भारत एक औपचारिक सहयोगी की तरह व्यवहार करे, जबकि भारत अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' के प्रति प्रतिबद्ध है। भारत कभी भी किसी ऐसे सैन्य गठबंधन का हिस्सा नहीं बनेगा, जहाँ उसे अपनी विदेश नीति का नियंत्रण वाशिंगटन को सौंपना पड़े।

यूक्रेन युद्ध के बाद रूस पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने रूस के साथ अपने ऐतिहासिक और रक्षा संबंधों को बनाए रखा है और रियायती दरों पर रूसी तेल खरीदा है। अमेरिका के लिए रूस एक बड़ा खतरा है, जबकि भारत के लिए रूस चीन के खिलाफ एक महत्वपूर्ण संतुलनकारी शक्ति है। महाद्वीपीय व समुद्री प्राथमिकताओं अमेरिका का मुख्य ध्यान समुद्री सुरक्षा (दक्षिण चीन सागर और ताइवान जलडमरूमध्य) पर है, जबकि भारत की प्राथमिक चुनौती उसकी महाद्वीपीय सीमाओं (हिमालय में चीन और पाकिस्तान के साथ दोहरे मोर्चे का खतरा) पर है।

**निष्कर्ष–** निष्कर्षतः, चीन कारक २१वीं सदी में भारत–अमेरिका संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक उत्प्रेरक (Catalyst) है। चीन के आक्रामक सैन्य और आर्थिक उदय ने नई दिल्ली और वाशिंगटन को एक अभूतपूर्व रणनीतिक संरेखण में बांध दिया है। यह साझेदारी अब केवल आकस्मिक सहयोग नहीं रह गई है, बल्कि यह हिंद–प्रशांत क्षेत्र के भविष्य को निर्धारित करने वाला एक दीर्घकालिक ढांचा बन चुकी है।

भारत–अमेरिका संबंधों का वर्तमान स्वरूप वैश्विक शक्ति संतुलन, आर्थिक हितों, तकनीकी सहयोग और सामरिक आवश्यकताओं से प्रभावित है। चीन के तीव्र आर्थिक एवं सैन्य उदय ने इन संबंधों को नई दिशा और गति प्रदान की है। हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की सक्रियता, भारत–चीन सीमा विवाद, दक्षिण चीन सागर की स्थिति तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्गठन जैसे कारकों ने भारत और अमेरिका के बीच सहयोग को और गहरा किया है।

हालाँकि, इस संबंध को पूरी तरह से सफल होने के लिए आवश्यक है कि अमेरिका भारत की भू–राजनीतिक मजबूरियों (जैसे रूस के साथ संबंध और रणनीतिक स्वायत्तता की आवश्यकता) को समझे और स्वीकार करे। भारत को अमेरिका एक 'कनिष्ठ भागीदार' (Junior Partner) के रूप में नहीं, बल्कि एक समान वैश्विक शक्ति के रूप में देखना चाहिए। भारत बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, रणनीतिक स्वायत्तता और संतुलित कूटनीति का समर्थन करता है। भविष्य में रक्षा, प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर, स्वच्छ ऊर्जा, समुद्री सुरक्षा और व्यापार जैसे क्षेत्रों में भारत–अमेरिका सहयोग और अधिक सुदृढ़ होने की संभावना है, और साथ ही भारत को यह भी समझना होगा कि आधुनिक तकनीकी और आर्थिक चुनौतियों का सामना अकेले नहीं किया जा सकता, और अमेरिका के साथ गहरे रक्षा व तकनीकी संबंध देश के राष्ट्रीय हित में हैं।

आने वाले दशकों में, भारत–अमेरिका साझेदारी का लचीलापन इस बात पर निर्भर करेगा कि वे चीन द्वारा उत्पन्न बहुआयामी चुनौतियों का सामना करते हुए अपने आपसी मतभेदों को कितनी कुशलता से प्रबंधित करते हैं। यह संबंध एशिया और संपूर्ण विश्व में बहुध्रुवीयता (Multipolarity) और लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने की सबसे बड़ी गारंटी है।

अतः यह कहा जा सकता है कि भारत–अमेरिका संबंधों में चीन कारक एक महत्वपूर्ण प्रेरक तत्व है, किन्तु यह दोनों देशों के संबंधों का एकमात्र आधार नहीं है। लोकतांत्रिक मूल्य, आर्थिक सहयोग, वैश्विक शासन में सहभागिता तथा साझा रणनीतिक हित भी इस साझेदारी को निरंतर मजबूत बना रहे हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ministry of External Affairs, Government of India, India–United States Bilateral Relations.
2. Ministry of External Affairs, India–China Relations.
3. Ministry of Defence, Government of India, Annual Report (विभिन्न वर्ष)।
4. Ministry of External Affairs, India's Indo-Pacific Oceans Initiative.
5. National Security Strategy of the United States (2022).
6. White House- Indo-Pacific Strategy of the United States (2022).
7. Rajiv Sikri, Challenge and Strategy: Rethinking India's Foreign Policy, Sage Publications.
8. C, Raja Mohan, Crossing the Rubicon: The Shaping of India's New Foreign Policy, Penguin Books.
9. Shashi Tharoor, Pax Indica: India and the World of the 21st Century, Penguin.
10. David Malone- Does the Elephant Dance\ Contemporary Indian Foreign Policy, Oxford University Press.
11. Ashley J, Tellis, India as a Leading Power, Carnegie Endowment.
12. Harsh V, Pant (Ed.), India's Foreign Policy: Retrospect and Prospect, Oxford University Press.
13. Sumit Ganguly, Conflict Unending: India–Pakistan Tensions Since 1947, Columbia University Press.
14. Ministry of Commerce and Industry, Government of India- Economic Survey of India (विभिन्न वर्ष)।
15. SIPRI (Stockholm International Peace Research Institute), Yearbook (नवीनतम संस्करण)।
16. ORF (Observer Research Foundation), India–US Strategic Partnership पर विभिन्न शोध–पत्र।
17. IDSA/MP–IDSA (Manohar Parrikar Institute for Defence Studies and Analyses), भारत–अमेरिका एवं भारत–चीन संबंधों पर शोध प्रकाशन।
18. United Nations, UN Charter and Reports on International Peace and Security.

*****